गीतकार

डा० अजय प्रसून

अनागत गीत संग्रह

दर्पण शिलालेख हो जाये...

दर्पण शिलालेख हो जाये

(अनागत–गीत–संग्रह)

प्रिय डॉ. राहुल मिश्रा जी
को
सस्नेह
अजय प्रसून
11/3/20

गीतकार

डा. अजय प्रसून

अध्यक्ष / संस्थापक

अ.भा. अनागत साहित्य संस्थान

हेल्थ स्क्वायर, लखनऊ–226003

प्रकाशक

भारतीय ज्ञान वीथिका, लखनऊ

सहयोग

अ.भा. अनागत साहित्य संस्थान, लखनऊ

❑ गीतकार : डा. अजय प्रसून

❑ प्रकाशक : भारतीय ज्ञान वीथिका, लखनऊ

❑ सर्वाधिकार सुरक्षित : श्रीमती ममता प्रसून
: द्वारा डा. अजय प्रसून ७७, सरोज निकेतन, हेल्थ स्क्वायर, लखनऊ–२२६००३

❑ प्रथम संस्करण : सन् उन्नीस सौ छियान्बे

❑ मूल्य : पचास रूपये मात्र

❑ मुखपृष्ठ के चित्रकार : अरुन कुमार पाण्डेय

❑ मुद्रक : ज्ञान वीथिका प्रिंटिंग प्रेस यहियागंज, लखनऊ–३

❑ कवर पृष्ठ के मुद्रक : मारुति मुद्रण लि॰ विधानसभा मार्ग, लखनऊ

❑ दर्पण शिलालेख हो जाये
(अनागत–गीत–संग्रह)

आत्मकथ्य–कृति के सम्बन्ध में

आज के संदर्भ में कविता मात्र मनोरंजन की वस्तु न होकर समाज के व्यवहारिक पक्ष को स्पर्श करती हुई जीवन के विविध रूपों को व्याख्यायित करती है। उसकी विषय वस्तु श्रृंगार प्रधान प्रतीकों और बिम्बों तक ही सीमित न होकर एक विराट आसमान का स्वरूप ले रही है जो स्वाभाविक ही है, क्योंकि आज का जीवन संघर्षरत मानव का जीवन है, समय आवाज दे रहा है कि अपनी अपनी शक्ति को पहचानों, निकल आओ अपने–अपने दायरों से, और सृजन की ऐसी गंगा बहा दो जिससे जगती का कण–कण रस–सिंचित हो सके, हृदय–हृदय में प्रीति की जान्हवी हिलोरे लें जिससे एक ऐसे नवीनतम समाज का निर्माण हो सके जिसके स्वप्न हमारे पूर्वजों ने देखे थे जो साकार न हो सके थे, उन्हें साकार करने का समय आ गया है। तभी हमारी आने वाली पीढ़ियों को नये दिशा–निर्देश मिल सकेंगे और यह तभी संभव होगा जब हमारी दृष्टि अनागत के अनछुये पक्षों को स्पर्श करेगी उनमें जीवन के नये–नये रंग भरेगी, मानवता को भी नव जीवन प्राप्त होगा, भारतीय–भावना गौरवान्वित होगी और हमारी राष्ट्रीय भावना को बल मिलेगा।

इन्हीं उद्देश्यों की पूर्ति हेतु काफी समय पूर्व मैने अनागत कविता का नमन किया था जिसे व्यवहारिक रूप में स्वीकार कर आज अनेकानेक रचनाकारों ने अनागत कविता–आंदोलन को स्वीकारा और उससे जुड़े। सृजन के नये क्षितिजों के द्वार खुले और नवीनतम वातायनों की सृष्टि का निर्माण संभव हो सका। इस क्रम में मेरे सम्पादन में 'शब्द नये गढ़ने हैं' 'अनागत के कमल हम हैं' जैसी अनागत काव्य कृतियां समाज के सम्मुख प्रकाशित रूप में आ सकी, साथ ही डा. कुसुमशाह रचित नींदे कहां गईं, शरद समर्थ रचित "ये रात खत्म होगी" आरती अर्पिता रचित "ये संदेश अनागत का है, मयंक शुक्ल 'मयंक' रचित 'दर्द के गांव चली हिन्दी गजल' एवं डा॰ कृष्ण कुमार चंचल रचित 'अखबार के दफ़्तर में आई है एक लड़की' सहित मेरे द्वारा रचित महानगर के बीच, एवं बांसुरी की भीतरी तह में, जैसी अनागत काव्य कृतियों का अवलोकन भी हिन्दी साहित्य के विद्वान पाठकों द्वारा किया जा चुका है। श्री गौरी शंकर मिश्र 'उ॰ प्र॰ मजदूर दर्पण' एवं श्री राजेन्द्र कृष्ण श्रीवास्तव

सम्पादक 'साहित्य प्रोत्साहन' अनागत काव्य विशेषांक प्रकाशित कर समाज को आंदोलित कर चुके हैं।

अनागत कविता आंदोलन को सर्वश्री सोहन लाल द्विवेदी, बलवीर सिंह रंग, राम ऋषि शुक्ल, स्व॰ भुशुण्डि जी, मानव, अदम गोण्डवी, डा. राम प्रसाद मिश्रा एवं शिवशंकर मिश्रा, रमेश चंद दुबे, डा. आशा शुक्ला, चक्रपाणि पाण्डेय, उमादत्त त्रिवेदी, श्रीपाल सिंह 'क्षेम', डा.रवीन्द्र भ्रमर, डा. उर्मिलेश, डा.रोहिताश्व अस्थाना, विनोद चंद्र पाण्डेय, डा. कुंवर चन्द्र प्रकाश सिंह, सूर्य कुमार पाण्डेय, रूद्रनाथ पाण्डेय, शाह, मधु त्रिपाठी, श्रीमती प्रमिला भारती एवं डा. कृष्णा शर्मा सदृश, अनेकानेक विद्वानों, कवियों एवं साहित्य मनीषियों द्वारा आर्शीवाद प्रदान किया जा चुका है। श्री मयंक किशोर शुक्ल 'मयंक', आलोक वर्मा, रवि अवस्थी एवं श्री नारायण नजर का भी विशेष सहयोग रहा है।

'दर्पण शिलालेख हो जाये' इसी श्रृंखला की एक कड़ी है यह संकलन सन् उन्नीस सौ बयासी में तैयार हो गया था किन्तु इसका प्रकाशन श्री उमादत्त त्रिवेदी जी के संरक्षण में अब संभव हो सका है। यह अनागत गीत संकलन यदि समाज द्वारा स्वीकार किया जाता है तो मैं समझूँगा कि मेरा प्रयास सफल है, सार्थक हैं।

दिनांक
२५ दिसम्बर ९६

डा. अजय प्रसून
अध्यक्ष–अ.भा.
अनागत साहित्य संस्थान
सरोज निकेतन, हेल्थ स्क्वायर
लखनऊ–३

भूमिका

हिन्दी साहित्य में अनागत कविता आंदोलन के प्रस्तावक। प्रर्वतक डा.अजय कुमार द्विवेदी 'प्रसून' (डा.अजय प्रसून) विगत दो दशकों से अधिक समय से साहित्य की विभिन्न धाराओं में सृजनरत हैं। उनकी लेखनी समाज के प्रत्येक वर्ग के लिये अनवरत रूप से चली हैं वह बहुमुखी प्रतिभा के धनी रचनाकारों में रहे हैं। अब इनकी प्रकाशित काव्यकृतियों 'युग के आंसू', 'गाओ गीत सुनाओ गीत', बच्चे गाये गीत, बच्चों शिष्टाचार न भूलों, बच्चों की प्यारी कवितायें, महानगर के बीच, बांसुरी की भीतरी तह में, 'शब्द नये गढ़ने हैं' एवं आनागत के कमल हम हैं तथा कविता प्रधान त्रैमासिक 'ताम्रपणी' प्रमुख हैं। अनके पत्रिकाओं के स्तंभलेखक के रूप में भी आपने कार्य किया है।

डा॰ अजय प्रसून द्वारा प्रस्तावित अनागत काव्य कृतियों में अब तक डा॰कुसुम शाह रचित 'नीदें कहां गई', आरती अर्पिता रचित ये संदेश अनागत का है, शरद समर्थ रचित 'ये रात खत्म न होगी' डा॰कृष्ण कुमार चंचल रचित 'अखबार के दफ्तर में आई है एक लड़की, एवं मयंक किशोर शुक्ल मयंक' रचित 'दर्द के गांव चली हिन्दी गजल' आदि प्रमुख हैं। शीघ्र आपके सम्पादन में एक अनागत गीत संग्रह 'शब्द की शक्ति को बचाना है' प्रकाशित होने वाला हैं। प्रस्तुत कृति 'दर्पण शिलालेख हो जाये' डा॰ प्रसून की एक महत्वपूर्ण कृति हैं जिसमें उनकी चुनी हुई काव्य रचनायें संग्रहीत हैं। यह कृति भी अनागत कविता आंदोलन को समर्पित हैं अनागत कविता का हिन्दी के नवीनतम इतिहास में प्रवेश हो चुका है और शीघ्र ही इस पर शोधकार्य भी सम्पन्न होगा, ऐसी कामना हैं।

डा॰अजय प्रसून द्वारा प्रस्तावित अनागत कविता आज की प्रमुख विधा के रूप में उभर कर सामने आई है जिससे युवा पीढ़ी को काव्य लेखन का महत्वपूर्ण संबल मिला हैं।

'दर्पण शिलालेख हो जाये' अनागत कविता आंदोलन के लिये मील का पत्थर बने तभी दर्पण शिलालेख हो पायेगा, ऐसा मेरा मानना है। मैं डा.अजय प्रसून के मंगलमय, साहित्यक भविष्य की कामना करता हूं और चाहता हूं कि उन्होंने साहित्य में अनागत कविता की जो अलख जगाई है वह सदियों–सदियों तक नवागत पीढ़ियों को प्रेरणा प्रदान करती रहेगी।

उमादत्त त्रिवेदी

दो शब्द

हिन्दी के गीतकारों में डा॰अजय प्रसून का एक महत्वपूर्ण और विशिष्ट स्थान है। मैने कवि सम्मेलन, दूरदर्शन, आकाशवाणी से उनके अनेक गीत सुने है और इधर उनके गीतों की एक पाण्डुलिपि भी देखी हैं उनके सभी गीत अनुभूति प्रवणता विषय वस्तु और व्यंजना शिल्प की दृष्टि से उत्कृष्ट हैं। अनेक गीतों में नितांत मौलिक प्रतीक और विम्ब अंकित है। भाषा प्रवाहपूर्ण और गेय है। उनके गीतों में सर्वत्र गेयता विद्यमान है।

प्रसून जी के गीत मुख्यतः राष्ट्रीय भावनाओं, विषयों श्रृंगार प्रधान अनुभूतियों और जीवन के विविध पक्षों से सम्बन्धित हैं। उनके गीत निश्चय ही पाठकों और स्रोताओं के हृदय को छू लेते हैं। उनकी सफलता का यही बड़ा प्रमाण है।

मैं उनकी सफलता की कामना करता हूं।

दिनांक १३.२.६३

डा॰ त्रिलोकी नाथ सिंह
एम॰ए॰ (हिन्दी) एम॰ए॰ भाषा विज्ञान
पी॰एच॰डी॰ (हिन्दी), डी॰लिट
भाषा विज्ञान
प्राध्यापक
हिन्दी तथा आधुनिक भारतीय भाषा

दो शब्द

आधुनिक कविता के युवा रचनाकारों में डा॰अजय प्रसून एक सशक्त हस्ताक्षर हैं। प्रसून जी कवि सम्मेलनों में बड़े चाव से सुने जाते हैं और आकाशवाणी, दूरदर्शन तथा हिन्दी की श्रेष्ठ पत्रिकाओं के माध्यम से इनके गीतों को अब तक प्रचुर प्रसिद्धि तथा लोकप्रियता प्राप्त हो चुकी हैं। ''ताम्रपर्णी'' नामक कविता प्रधान त्रैमासिक का कई वर्ष पूर्व उन्होंने सफलता पूर्वक सम्पादन किया था और इस पत्रिका के सुरक्षित अंकों से हिन्दी की काव्य प्रतिभाओं के समायोजन में उनकी अपूर्व क्षमता का परिचय मिलता है। उनकी गाओ गीत सुनाओ गीत नामक बाल पुस्तक इस वर्ष उत्तर प्रदेश शासन द्वारा पुरस्कृत हो चुकी है और राष्ट्रकवि सोहनलाल द्विवेदी की शुभ प्रेरणा से इनकी, काव्य प्रतिभा के समादर में 'अजय प्रसून संध्या' भी मनायी गयी थी।

यह प्रसन्नता की बात है कि प्रसून जी ने ''दर्पण शिलालेख हो जाये'' शीर्षक काव्य–पाण्डुलिपि में अपनी अन्यतम श्रेष्ठतम रचनाओं का संकलन प्रस्तुत किया है। इस काव्य संकलन में देश प्रेम श्रृंगार और जीवन दर्शन की धारा प्रवाहित है और कुल मिला कर जीवन के विभिन्न आयामों को स्पर्श करने वाला प्रतिनिधि संकलन है। जीवन के शाश्वत दर्पण में कवि ने जो कुछ देखा है उसकी अमिट छाप है ''समय की शिला'' पर अंकित कर देना ही कवि को इष्ट है। इस विश्वास के साथ कि यह काव्य संकलन हिन्दी साहित्य में अपना स्थायी स्थान बनाने में समर्थ होगा मैं ''दर्पण शिलालेख हो जाये की'' सफलता के लिये हृदय से शुभकामना करता हूं।

दिनांक ५.२.६३

राम ऋषि शुक्ल
प्रधान सम्पादक 'मानवी मासिक'
मातृ प्रकाशक सी–६, रामदुलारी ट्रस्ट बिल्डिंग,
चौक, लखनऊ

दो शब्द

मैने अनेक बार प्रसिद्ध तरूण कवि डा॰ अजय प्रसून के मुख से उनकी कवितायें गीत, मुक्तक एवं गजलें सुनने का अवसर पाया हैं उनके गीत संकलन 'दर्पण शिलालेख हो जाये' को मैने देखा है। उनके गीतों में भाव पक्ष एवं कला पक्ष का संगम है। अभिव्यक्ति की कुशलता, प्राकृतिक सौन्दर्य के सूक्ष्म बिम्ब मानसिक व्यथा के मर्मस्पर्शी चित्रों में चेतना के सिंधु को आंदोलित करने की शक्ति है।

आज के दुख दुग्ध एवं तापतप्त जीवन में अजय प्रसून के गीत आशा की ज्योति पथ के सम्बल एव जनारण्य में माधुर्य के श्रोत है। मुझे आशा है कि अजय प्रसून मां भारती के अजिर में कला सहस्त्रवातक नीराजन प्रज्वलित कर अपनी गन्धपूत साधना से भविष्य के अनजान शिखरों पर आलोक विकीर्ण करते रहेंगे।

राज बहादुर विकल
विकल जलालाबादी
शाजहाँपुर (जलालाबाद)

अनागत–वाणी–वंदना

प्रीति मुखर अंतर की हो सके,
मां गीतों का ऐसा दान दो।
छलक उठे गीतों की गागरी,
भावों के रस भीगे व्योम से।
सांस–सांस अपनापन जोड़ ले।
मानस में रचे–बसे ओम से,
शांति मुखर सागर की हो सके,
मां लहरों का ऐसा दान दो।
चिर शाश्वत सदियों की कामना,
पाये फिर नवजीवन की दिशा।
किरणों की माला में गूंथ लें,
सद्भावों की उजली हर निशा।
ज्योति मुखर घर–घर की हो सके,
मां दीपों का ऐसा दान दो।
भटक गई मानवता पंथ से,
सदाचरण की आंखों में नमी।
रीती हर गागर भर आज दो,
पूरी हो जीवन की हर कमी।
गूंज मुखर हर–हर की हो सके,
माँ! श्लोकों का ऐसा दान दो।

डा॰ अजय प्रसून

तैर गई सीने में चाँदनी तरल

तैर गई सीने में चाँदनी तरल -
तारों की छाँव में ॥

हरियाली पलकों को मीचती गयी,
रेतीली साँसों को सींचती गई।
मेघों ने बरसाई प्रीति की अनल -
मौसम के गाँव में ॥

डाल-डाल कचनारी देह सी लगी,
सोनजुही सपनों की प्रेय सी लगी।
अधरों पे ऋतु वाले मीत आजकल -
सिहरन सी पाँव में ॥

सतरंगी चाह व्योम में बिखर गई,
वसुधा की रूप माधुरी निखर गई।
आँचल में भर लाइ भावना सरल -
सरिता की नाव में ॥

भाव शंख ध्यान मग्न गूजने लगे,
प्राणों की प्रतिमाये पूजने लगे।
झरनों सी बह आई रेशमी गजल -
मन के बहाव में ॥

मौसम भाया मीन को

मौसम भाया मीन को।
जब से लगे भिगोने बादल तपती हुई जमीन को ॥

हर आँचल गंगा सागर,
हर सपना नींद हुआ।
तन कंचन हो गया और -
मन कटी रसीद हुआ।
योगी छोड़ कमंडल भागा त्याग चला कोपीन को।

अधरों पर बिजुरी का कंपन -
लिखती पुरवाई,
ढालानों में आल्हा ऊदल -
आँगन में काई।
गाँव - गली में बजा रहे हैं झूम सपेरे बीन को ॥

प्रेम चन्द्र के होरी बनिया -
खेतों में नाचें,
सुखमय जीवन की आगत -
की पुस्तक बाँचें।
गुजर बसर अब हो जायेगी आस बंधी है दीन को ॥

आओ मिलकर करें वंदना

आओ मिलकर करें वंदना हम भारत भगवान की।

करें वंदना गंगा की यमुना की लहरों की,
कुओं - पोखरों तालों की खेतों की नहरों की।

करें वंदना खलिहानों की त्यागी अडिग किसान की।

करें वंदना मंदिर - मस्जिद की, गिरजाघर की,
गीता - वेद - कुरान बाइबिल की निशिवासर की।

राम - रहीमा की ईसा की सत्य और ईमान की।

करें वंदना रामेश्वर की काबा - काशी की,
करें वंदना हर भाषा हर भारतवासी की।

तुलसी-सूर-कबीर-जायसी-गालिब के सम्मान की।

गीत

मेरा बहुत पुराना रिश्ता सुधियों की दहलीज से,
जैसे भाग्य जुड़ा नारी का पावन कजली तीज से।

सूखे हुए सरोवर जैसे -
सपने करते प्रार्थना।
फैलाकर दोनों हाथों को -
गीत कर रहे याचना।
जैसे है वैसे अच्छे हम कालर फटी कमीज से,
मेरे मन को बहलाओ मत बच्चों वाली चीज से।

मेरे सुख की सीमा होती -
शुरू जहाँ से वही खतम।
तोड़ दिये मेरी खुशियों ने -
इस जीवन के सभी भरम।
मेरी पीर निखर जायेगी आंगन के तावीज से,
और एक दिन वृक्ष बनेगी स्मृतियों के बीज से।

अंधों की भीड़ में खड़े होकर

अंधों की भीड़ में खड़े होकर -
नेत्रदान कर भी दें तो किसको ?

सपनों की धूल मात्र के लिये
हर कोई फैलाता हाथ है,
यह समाज जिसमें हम जी रहे
शिशु जैसा आज भी अनाथ है।
अपनों के द्वार पर खड़े होकर -
स्वप्न-दान कर भी दे तो किसको ?

क्या उपाय कर डाले कुछ कहो
होती जाती वेश्या है यह सदी,
एक मार्ग एक लक्ष्य के लिए
बहती ही जाती है यह नदी।
प्यासों की पंक्ति में खड़े होकर -
रक्तदान कर भी तो किसको ?

दरवाजे खुल जायेंगे अभी
लाशों के आने की बात है,
एक से लगे हमको रात दिन
बतलाओ दिन है या रात है।
श्मसानी भूमि पर खड़े होकर -
प्राणदान कर भी दे तो किसको ?

सुख का मार्ग चाह कर

सुख का मार्ग चाहकर हमसे छोड़ा नहीं गया।
इसीलिये सपनों का दर्पण तोड़ा नहीं गया।।

उड़ता रहा हवाओं में मन विहगों के भ्रम से,
एक - एक कर सभी सहारे टूट गये क्रम से।
फिर भी अपनों से अपनापन जोड़ा नहीं गया।
इसीलिये सपनों का दर्पण तोड़ा नहीं गया।।

तरुवर बाँह पसारे मेरी खातिर खड़े रहे,
बिखरे शत - शत फूल और पाँवों पर पड़े रहे।
इतने पर भी सीने का व्रण फोड़ा नहीं गया।
इसीलिये सपनों का दर्पण तोड़ा नहीं गया।।

मैंने तो अंजुरी में सागर भरना चाहा था,
जिस दिन हार हुई उस दिन को खूब सराहा था।
इससे ही उस ओर कभी मुंह मोड़ा नहीं गया।
इसीलिये सपनों का दर्पण तोड़ा नहीं गया।।

महानगर अपना

भीड़-आदमी-सड़कें-पैसा महानगर अपना।
बंदर और मदारी जैसा महानगर अपना।

दुर्घटनायें ऐसी जैसे बात न कोई हो,
ऐसा कौन भला है जिसकी आँख न रोई हो।
जैसा तुम समझे हो वैसा महानगर अपना।
भीड़-आदमी-सड़कें-पैसा महानगर अपना।

बड़े घरों की दीवारें कुछ ज्यादा सुनती है,
झोंपड़ियाँ आगत के ऊँचे सपने बुनती है।
मदिरायल की कच्ची मय सा महानगर अपना।
भीड़-आदमी-सड़कें-पैसा महानगर अपना।

धरती पर चलने के आदी नभ छूना चाहें,
चमकातीं नाखून शहर की जहरीली बाँहें।
समझ न पाया अब तक कैसा महानगर अपना,
भीड़-आदमी-सड़कें-पैसा महानगर अपना।

चुटकी भर सिंदूर

दहक रहें हैं प्राण-प्राण तुम दहकी हुई-
आग ले जाओ,
अगर जरूरत समझो चुटकी भर सिंदूर-
मांग ले जाओ।

ले जाओ सपनों की गंगा मन का ताजमहल ले जाओ,
मीठे जलवाली नदियां में तिरती हुई गजल ले जाओ,
सोच विचार व्यर्थ करना है ले जाओ मोती सागर के,
नहीं कहूँगा ओ बसंत श्री। झूठे सब्ज-
बाग ले जाओ।

हो ईश्वर की मौलिक रचना गति नहीं कोई अनुवादित,
हंसी तुम्हारी नर्म भापसी मेरे हृदय पटल पर अंकित।
एक फूल सा मेरा मन है मेरा मन राकेश नहीं है,
वरना कहता तुमसे मेरे मन का कुटिल-
दाग ले जाओ।

दूध नहाई देह, दूध से धुला हुआ यौवन, क्वाँरापन,
कर देगें पागल ये चोली-चूनर अधर हाथ के कंगन,
आओ रच दूं जावक पावों में बिंदिया रच दूं माथे पर
तुम्हें संवारे जो बरसों तक ऐसा शुभ-
सुहाग ले जाओ।

तुमने मुंह फेर लिया

तुमने मुंह भर फेर लिया हम हंसना भूल गये।

भूल गये लहराना लहरें बनकर नदियां में,
भँवरा बनकर इठलाना कलियों की बगियां में।

मौसम के तरुपालु बाँह में फंसना भूल गये।

पहले हम सागर की मस्ती लेकर जीते थे,
मेघों झालरें उठा कर जल हम पीते थे।

अब तो जैसे अपने ही घर बसना भूल गये।

एक-एक पल युग जैसा युग कैसे बीतेंगे।
लौह अर्गलाओं जैसे दिन कैसे जीतेंगे।

हमें देखकर तक्षक दल भी डंसना भूल गये।

बिखरा दो केश इस तरह प्रिये

बिखरा दो केश इस तरह प्रिये -
एक प्यास और मेघ जल बने।

हो जाये गंगा जल गीत जल
गीत बने कुकुम सा रूप ये,
आकर्षण की चूनर बीनकर
मीत बने चटकीली धूप ये,
पांवों में गीत के स्वर बांधकर -
दौड़ पड़े शब्दों के मेमने।

मौन ज्वार मानस के सिंधु का
फिर न भावना कहीं समेट ले,
संयम की ब्रह्म गांठ तोड़कर
लहरों के जाल में लपेट ले।
अविभाजित जीवन को बांटकर -
आ जाये अमृत - पल सामने।

छू भर दो मन के आकाश को
नतमस्तक हो जायेगा अभी,
आंदोलन भीतर जो हो रहा
सच मानो थम जायेगा अभी।
मिल जायेगी थोड़ी सांत्वना -
दृश्य आसपास के लुभावने।

देश के देवता

देश के देवता भावना से भरी,
गीत की बांसुरी है तुम्हारे लिये।

आंधियों में तुम्हीं दीप बनकर जले,
साथ अपने समय को बहा ले चले।
देश के देवता कामना से भरी,
प्रीति की बांसुरी है तुम्हारे लिये।

तुम जिये हो सदा आदमी के लिये,
तुमने खींचे सृजन के नये हाशिये।
देश के देवता कल्पना से भरी,
जीत की बांसुरी है तुम्हारे लिये।

तुमने छू ली हिमालय की ऊँचाइयां,
तुमने छू ली जलधि की भी गहराइयां।
देश के देवता साधना से भरी,
नीति की बांसुरी है तुम्हारे लिये।

बोलती दिशायें हैं डोलती हवायें हैं

बोलती दिशायें हैं डोलती हवायें हैं —
बाग-बाग में वसंत का हुआ है आगमन,
फूल-फूल को प्रणाम शाख-शाख को नमन।
मन अमलतास का हुआ सपन गीत वनपलाश का हुआ सपन।

महमहा रही समीर व्योम को लुभावनी,
लग रही है आज की उषा बड़ी सुहावनी।
सरसो की बालियां केशर की क्यारियाँ —
करती हैं मधु ऋतु का झूम-झूम आचमन।
मन अमलतास का हुआ सपन गीत वनपलाश का हुआ सपन।

हर गुलाब एक नई चेतना है बाँटता,
ऋतु पति भी पूछता है व्यक्ति का पता।
जागे हैं भाव भी आया बदलाव भी —
मौसम के आँगन में लाख - लाख है सुमन।
मन अमलतास का हुआ सपन गीत वनपलाश का हुआ सपन।

जीवन में खुशियों की धूप झिलमिला उठी,
अधरों पर आगत की प्यास खिलखिला उठी।
पंख खोल खग उड़े पथ से फिर पग जुड़े —
थके थके राजहंस के खुले है फिर नयन।
मन अमलतास का हुआ सपन गीत वनपलाश का हुआ सपन।

तुम समय का ज्वार युवकों

तुम समय का ज्वार युवकों, आजमाना क्या ?

उस दिशा के हो जिधर सूरज निकलता है,
और जिनसे पूर्वजों का नाम चलता है।
वह बनो इतिहास जो युग मोड़ देता हो,
साथ जिसके सिंधु का भी जल उछलता है।

रोशनी के द्वार सच से मुंह छिपाना क्या ?

उलझनों का जिंदगी के साथ नाता है,
दिन इरादों के सहारे बीत जाता है।
एक पल गम्भीरता को भी ग्रहण करना,
हर घड़ी तो मुस्कुराना भी न भाता है।

हो सलिल की धर फिर आँसू बहाना क्या ?

तोड़ सकते हो अगर ये रूढ़ियाँ तोड़ो,
और हर दूरी समय की चाल से जोड़ो,
पाँव ये होने न पाये मंजिलों से दूर,
एक व्रत लो तुम सृजन की शृंखला जोड़ो।

उस क्षितिज के पार ह आँखे चुराना क्या ?

हिरनों के जंगल में

हिरनों के जंगल में या झरनों के जल में,
स्मृतियों के दर्पण रंगों के डूबे हैं।

कभी - कभी हंस देना कभी - रो देना,
जैसे कुछ पा करके उसी समय खो देना।
कभी - कभी सीने में तीर सा चुभो देना,
तुमको तो पाने के ऊँचे मंसूबे है।

भावुकता की बांहें कोमलता की राहे,
जीवन की गति विधियां खुशियों के बन चाहें।
रोशनी के डेरों को किस तरह सराहें,
अब तो यह हालत है अपने से ऊबे हैं।

सांसों का थम जाना मौसम का बल खाना,
मेघों के कुंतल में पछुआ का लहराना।
प्यार की फुहारों से भीगे क्षण पी जाना,
सच मानो वे कुछ दिन आप में अजूबे है।

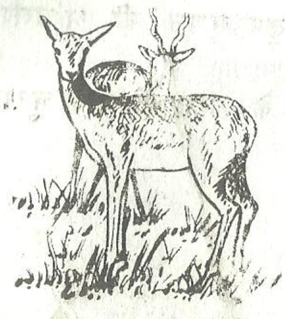

गीत

गीत फलेंगे फूलेंगे इस माटी में,
छद - मुक्त की गजलों का मौसम होगा -
गहरे लाल गुलाबों वाली घाटी में।

जब तुम आओगी चूनर ओढ़े नभ की
अधर फालसो के रंग वाले खुल जायेंगे,
एक नहीं दो नहीं लाज के सौ से चेहरे
मेरी मानो यौवन जल से धुल जायेंगे।

प्यास जगेगी जायेगी इस माटी
स्नेह - प्रीति का अपने पन का मौसम होगा -
गहरे पीले, गुलाबी वाली घाटी में।

पलकों पर कोहरा छायेगा मनुहारों का
मुक्त हवा में मुक्त उड़ेंगे कुंतल काले,
जिन्हें देखकर शरमा जायेंगे चटकीले
भीगे-भीगे मेघों के दल भी जल वाले।

सुबह हँसेगी नाचेगी इस माटी में
धूप - छाह का का किरण - किरण का मौसम होगा -
गहरे श्वेत गुलाबों वाली घाटी में।

चलो चले भरले बाहों में

चलो चले भरले बाहों में
बीत रहे जो पल ॥

हो जायेगा एक महोत्सव पूरा इस जीवन का,
तन का, मन का, अपने घर आँगन का,

सुखद यही है नभ त्यागे हम
ग्रहण करे भूतल ॥

करें आज कुछ ऐसा मिलकर सदियां याद करें,
गाये अनगाये, अनबोले स्वर आबाद करें।

पायें इतना धैर्य हृदय की
कटुता जाये जल ॥

जाना हमें अभी है अपनी मंजिल से आगे,
बिखरे हुए स्वप्न खुशियों के, वर्तमान माँगे।

जो करना है आज करें हम,
क्या कर लेंगे कल ॥

बीते जो दिन कुछ ऐसे

बीते जो दिन कुछ ऐसे बीते अपने आगे,
जैसे प्रातः चार बजे आलसी व्यक्ति जागे।

गीतों का मन इस मौसम में कुछ ऐसे भटका,
अनमनस्क होकर जैसे कोई दर्पण चटका।
स्वर्ण हिरन से सपने मरु में ऐसे भाग रहे,
जैसे किसी दौड़ में कोई प्रतियोगी भागे।

थकी धूप सूरज की बाँहों से ऐसे निकली,
जैसे कोई रोगिन अपना छोड़ चली।
ऐसी ही कुछ स्थितियों में सुख ऐसे लगते,
जैसे फटी कमीजों पर हो रेशम के धागे।

लोग बाग इस तरह अर्थ की बात सोचते हैं,
मरी देह को मिलकर जैसे गिद्ध नोचते हैं।
इन लोगों के बीच जिंदगी ऐसे चीख रही,
जैसे कोई हत्यारों से प्राणदान माँगे।

रो देगा मधुमास

रो देगा मधुमास अगर तुम जाओगे,
बढ़ जायेगी प्यास अगर तुम आओगे।

अव्यवस्थित हो जायेगा जीवन क्रम भी,
होता है आभास अगर तुम जाओगे।

सुख की कृति पढ़ने को मन व्याकुल होगा,
दुख देगी हर साँस अगर तुम जाओगे।

पल-पल काँच कनीसा कसकेगा रह-रह,
सपनों का सहवास अगर तुम जाओगे।

धीरे-धीरे तन गल जायेगा जैसे,
हिम मंडित आकाश अगर तुम जाओगे।

अपना कहने को फिर क्या रह जायेगा,
कुछ न बचेगा पास अगर तुम जाओगे।

लगता है प्रसून ऐसा हो जायेगा,
वातावरण उदास अगर तुम जाओगे।

कब तक संतोष धन चलेगा

पलकों की नींद खो गयी है
सपनों का आगमन खलेगा,
सदियों तक जागरण चला है
सदियों तक जागरण चलेगा।

पोर-पोर जलता दावानल गंगाजल व्यर्थ हो गया है,
कुछ ऐसी बात हो गई है मौसम सिद्धार्थ हो गया है।
कांटे मधुमास बो गया है
अपराधी आप हो गया है,
इसीलिए आज से शहर में
रात दिन सदाचरण चलेगा।

कोई अपराध हो न जाये घटनाक्रम साथ दे रहें हैं,
सड़कों पर श्वेत वस्त्रधारी लोगों को हाथ दे रहें हैं।
आपसी तनाव बढ़ गया है
भीड़ का प्रभाव बढ़ गया है,
हर कोई है प्रभाव शाली,
कैसे आवागमन चलेगा।

कहने की कोई भी कहे ले अपनों से भागता रहा हू।
लेकिन इसका रहस्य क्या है आदि अंत सब बता रहा हूँ।
जीवन की पीर बावली है,
जाती अभिशाप की गली है,
मनका धन दाँव पर लगा है,
कब तक सतोष धन चलेगा।

आने वाला कल

आने वाला कल हमको कुछ ऐसा दिखता है,
आम आदमी को जैसा बस पैसा दिखता है।

बीते कल की बात न पूछो कुछ ऐसे बीते,
जैसे अभी सामने से है ही गुजरे हो चीतें।
जिधर देखते हम अजगर से लोग दिखाई दें।
किससे क्या कह दें आगत कैसा दिखता हैं।

वर्तमान की आँखों में यू नभ सारा घूमे,
महानगर की सड़कों पर ज्यों आवारा घूमे।
घूम रहे हैं लोग मुट्ठियों में तूफान लिये,
जाने कब क्या हो जाये संशय सा दिखता है।

समय बड़ा और हम छोटे वह आदम खोर हुआ।
जैसे बड़े मगर के जबड़े में छोटा कछुआ।
पानी पीते हुए कि जैसे सांप निगल जाय,
कुछ ऐसा ही सोच सोचकर भय सा दिखता है।

बरखा की बूँदे

बरखा की बूँदें कर जाती पागल तन मन प्राण।
यही देती हैं जीवन दान।।

भीगी-भीगी इनकी काया,
इनकी समझ न आई माया।
लोह धातु को कंचन करना इनसे सीख सुजान।
यही देती है जीवन दान।।

पुरवा के झीने आँचल में,
नाम लिखे अपना जल थल में।
इनके स्वागत में गाये समवेत स्वरों में गान।
यही देती है जीवन दान।।

इनकी अमर कृपा हो जाये,
जीने की सुविधा हो जाये।
घर आंगन में, गांव-गली में साथ चले भगवान।
यही देती हैं जीवन दान।।

देती ये वरदान अमृत सा,
मानों इनको पूजा घृत सा।
इनका वंदन करो इन्हीं से अपना ह कल्याण।
यही देती है जीवन दान।।

महके हुए स्वरों की

महके हुए स्वरों की तोड़ों न पाँखुरी तुम ,
ऐसे नहीं बिखेरों ये मन की माधुरी तुम ।

मौसम भी कह रहा है छेड़ों न ऐसी बातें ,
मिलती है भाग्य से ही ये रोशनी रातें ।
आते नहीं दुबारा ये पल जो बीतते हैं ,
ऐसे नहीं बजाओ साँसों की बाँसुरी तुम ।

रख लो सँभाल करके गीतों की ये ऋचायें ,
कलियाँ सुना रही हैं मधुलोक की कथायें ।
सपने लगे जगाने मरु में गुलाब जब भी ,
कहीं तोड़ ही न देना ये प्रीति की धुरी तुम ।

अँजुरी में भर रहे है अंगार हम विगत के ,
देखो जला न देना पलकों में दीप धृत के ।
जब हम लगे कि रोने मणिहार कामना के ,
देखो चला देना अनुभूति की छुरी तुम ।

सुधि के नवरंग सबेरे

सुधि के नवरंग सबेरे दर्पण में देख चितेरे ।।

शब्दों के बादल बरसे गीतों के आँचल तरसे ,
जीवन की मिट चली तपन ध्वनियों की पायल सरसे ।
नियत देख हँसने लगी बाँहों में कसने लगी ,
कब से अनजान हर डगर अब किसने फूल बिखेरे ।।

मुखरित हो सावन आते साँसों को सोम पिलाते ,
बनकर अनमोल सहारे वीणा के तार गुंजाते ।
उम्र के दिन बढ़ गये एक गीत और पढ़ गये ,
पागल थी प्यास थम चली धुल गये तमाम अँधेरे ।।

ये कैसी वशी की तान यह किसके अधरों का गान ,
मिम गई बहार से बहार जीवन विश्वास के समान ।
धूप - छांह जैसे सपने जाने कब होंगे अपने ,
स्वर्ण - थाल की तरह सजे ऊषा का रंग द्वार घेरे ।।

दहक रहे है प्राण

दहक रहे है प्राण ! प्राण ! तुम दहकी हुई आग ले लाओ,
अगर जरूरत समझो चुटकी भर सिंदूर माँग ले जाओ।

ले जाओ सपनों की गंगा मन का ताज महल ले जाओ,
मीठे जल वाली नदिया में तिरती हुई गजल ले जाओ।
सोच विचार व्यर्थ करना है ले जाओ मीती मानस के,
नहीं कहूंगा ओ बसंत श्री झूठे सब्जबाग ले जाओ।

हो ईश्वर की मौलिक रचना गीत नहीं कोई अनुवादित,
हंसी तुम्हारी नरम भाप सी मेरे हृदय पटल पर अंकित।
एक फूल सा मेरा मन है मेरा मन राकेश नहीं है,
वरना कहना तुमसे मेरे मन का कुटिल दाम ले जाओ।

दूध नहाई देह दूध से धुला हुआ यौवन क्वारापन,
कर देंगे पागल ये चोली, चूनर, अधर, हाथ के कंगन।
आओ रच दूँ जावक पांवों में बिंदिया रच दूँ मांथे पर,
तुम्हें सवारे जो बरसों तक ऐसा शुभ सुहाग ले जाओ।

होनी तो होकर रहती है

होनी तो होकर रहती है सच है बात तुम्हारी लेकिन-
अनहोनी भी हो जाती है कभी-कभी अपने जीवन में।

झूठे सारे जग के वादे,
झूठा हर दर्पण का चेहरा।
अक्सर झूठी तारीफों का,
लोग पहन लेते हैं सेहरा।
झूठे दिन है झूठी रातें झूंठी इस मौसम की बातें-
झूठा होगा वह जल भी बरसेगा अबकी सावन में।

कभी-कभी ऐसा भी होता,
मन में भर जाता दावानल,
देह सुलगने लगती जलने,
लगता है सपनों का आँचल।
जल जाती कलियाँ मधुऋतु की जल जाते हैं पत्र नवोदित-
राजहंस झीलों से उड़कर दूर कहीं बसते निर्जन में।

बस एक निकेतन और

बस एक निकेतन और।
फिर उसके बाद नहीं मांगेंगे जीवन और -
बस एक निकेतन और॥

ये लोभी जग वाले,
संशय कितने पाले।
संदेहों की मांटी -
में कौन बीज डाले।
इतने तो व्यर्थ गये थोड़े अभिवादन और -
बस एक निकेतन और॥

बस्ती आबाद नहीं,
सुख के सवाद नहीं।
अपवाद फले फूले -
यह भी अपवाद नहीं।
हम मांग रसे मन के कुछ उजले दर्पण और -
बस एक निकेतन और॥

हम प्यार मांगते हैं,
अधिकार मांगते हैं।
क्रय - विक्रय से ऊपर -
मनुहार मांगते हैं।
हम मांग रहे सपनें थोड़ा अपनापन और -
बस एक निकेतन और॥

जब से हम लहराये

जब से हम लहराये काल कूट बन,
अंशु - अंशु चंदन सी हो गई सघन।

कालिंदी - भीष्म से थर थरा गई,
शिला - शिला पर्वतें भी डगमगा गई।
स्वप्निल मन कल्पना वारुणी बनी,
निशा - निशा जीवन की हो गई गहन।

अंबर की लाली सिंदूर हो गई,
देह - देह कंचन मयूर हो गई -
जब से मन - भावना दामिनी बनी,
दिशा - दिशा गीतों की लग रही सपन।

क्षितिजों की सीमा भी छूटने लगी,
ऋचा - ऋचा वेदों की गूंजने लगी।
मनहर मन - कामना चांदनी बनी,
शिखा - शिखा दीपों की हो गई दहन।

तर्कस से छूट - छूट शायक चले,
बिना चांद के आज तारे जले।
जब से मन - साधना रागिनी बनी,
सांसों गली - गली बढ़ रही तपन।

सुख के सपने देख मछेरे

सुख के सपने देख मछेरे ! गुन-गुन गाये जा,
पायेगा तू सोन-मछरिया गीत सुनाये जा ।।

बैठ निराशा वाले रथ में लक्ष्य विहीन न हो,
असफलताओं के दर्पण में इतना लीन न हो ।
साथ ये मौसम देगा तू मन को बहलाये जा ।।

आने वाला हर पल तेरा सोच नहीं करना,
आशाओं की चूनर कहकी कलियों से भरना ।
चहक लिये चिड़ियों की नभ में धूम मचाये जा ।।

जीवन में यदि हार कभी तो जीत कभी तो होगी।
नये गुलाबों वाली ऊषा मीत कभी होगी ।
खुशियाँ नाचेंगी गायेंगी दुख बिसराये जा ।।

वर्तमान हम आगत और अतीत हम

वर्तमान हम आगत और अतीत हम,
सुख के सपनों के प्रभात के गीत हम ।

सागर हमसे ही गहराई ले जाये,
अंबर हमसे ही ऊँचाई ले जाये ।
समय हमारे चलने से गतिशील हो,
दावानल से भी जाते हैं जीत हम ।

वृक्ष हमारी मेहनत का फल देते हैं,
मेघ हमारे कहने पर जल देते हैं ।
मौसम अपने एक इशारे पर महके,
क्योंकि रश्मि के और सुमन के मीत हम ।

सूरज हमसे तेज मांगने आता है,
चंदा हमसे ही शीतलता पाता है ।
रात सुलाती है लोरी गाकर हमको,
चिड़ियों के कलरव का मृदु संगीत हम ।

मेरा हिन्दुस्तान

सारे देश में धुआं सा छाया हुआ है,
मेरा हिन्दुस्तान बौखलाया हुआ है।
गुजरात की उषा निशा सरीखी है
गली-गली लहू वाली धार दीखी है
भारतीयता हजार बार चीखी है,
कोटे वाली बात विष से भी तीखी है।
कालचक्र ने कहर सा छाया हुआ है
संविधान में तुफान आया हुआ है
कातिलों के नाम ये पंजाब हो गया,
आदमी का रक्त ज्यों शराब हो गया।
ज्वालामुखी जैसे आफताब हो गया
विस्फोट शांति का जवाब हो गया
पानी भी चनाब का खौलाया हुआ है,
उग्रवाद ने भी सिर उठाया हुआ है।
शाम काश्मीर की भी धार दार है
माता वैष्णवी की भूमि पर प्रहार है
वधुओं असम की सांसों में दरार है,
पाक और चीन का वतन पे वार है।
खोये नहीं पुण्य जो कमाया हुआ है
बाहुबल से जिसे बचाया हुआ है
मंदिर और मस्जिद में ठनी हुई है,
अनहोनी वाली शंका बनी हुई है।
भारती की भूमि रक्त सनी हुई है
आत्मा दुरात्मा की जनी हुई है
क्रूरता का झंडा ज्यों लहराया हुआ है।
मानवीयता पे काला साया हुआ है।
कुछ तो करो कि आँख नम हो न जाये
हाल और देश का विषम हो न जाये
रोशनी की घाटियों में तम हो न जाये,
शत्रुओं को कोई भी बहम हो न जाये
गीत पचशील का शरमाया हुआ है
जो कि राष्ट्रनायकों का गाया हुआ है

—000—

तुम क्या मिले गीत - शिशु

तुम क्या मिले गीत-शिशु घुटनों चलना सीख गये।

सीख गई शरमाना फिर से मौसम की कलियाँ,
गुन-गुन गाने लगीं बावरी राधा की गलियाँ।

फल विहीन तरु तुम्हें देखकर फलना सीख गये।

बिना तुम्हारे दिन विषधर के फन से लगते थे,
रातों के दर्पण विरहिन के मन से लगते थे।

लौ तुमसे ही लेकर दीपक जलना सीख गये।

तुमसे मिलकर प्रीति हृदय की धन्य हो गई है,
पथ के शूलों की हर गलती क्षम्य हो गई है।

इसीलिये तो सुमन हाथ फिर मलना सीख गये।

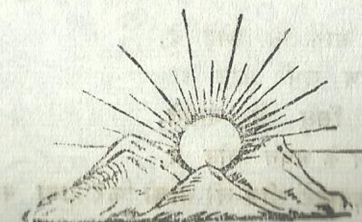

सत्य है बात ये सर्वथा

सत्य है बात ये सर्वथा आज अंतर को मैने मथा।
कोई माने न माने मगर मेरे जीवन की तुम हो कथा।

धूप की भांति खिलते हुए,
छाँह की भांति मिलते हुए।
झील में कंकड़ी फेंककर,
नीर की भांति हिलते हुए
तुमने सुख जो अपरीमित दिया स्वर्ग की प्राप्ति से कम न था।
कोई माने न माने मगर मेरे जीवन की तुम हो कथा।।

एक झरने से बहते हुए।
अनकही बात कहते हुए,
तृप्ति के गीत गाते हुए,
फांसी साँसों को गहते हुए।
ढ़हते जीवन को संतोष का दान देकर हरी हर व्यथा।
कोई माने न माने मगर मेरे जीवन की तुम हो कथा।

छंद गीतों सा गाया मुझे,
इस तरह से लुभाया मुझे।
जन्म-जन्मातरों के लिये
तुमने अपना बनाया मुझे।
आज भी मन परमहंस है कल भी तो मन परम हंस था।
कोई माने न माने मगर मेरे जीवन की तुम हो कथा।

यौवनोत्सुक ऋचाये मिली,
दाधतम वासनायें मिली।
पर न तुम जैसा कोई मिला,
कितनी मोहक बलायें मिलीं।
कितनी स्वच्छन्द है आत्मा कितनी मजबूत है आस्था।
कोई माने न माने मगर मेरे जीवन की तुम हो कथा।

कल भले साथ तन छोड़ दे,
काल दर्पण सभी फोड़ दे।
नैन के सिंधु में जन्मते,
मधु सवन के भवन तोड़ दे,
तुमने कड़वाहटें छीन ली सोचो फिर होता क्या अन्यथा।
कोई माने न माने मगर मेरे जीवन की तुम हो कथा।

बरखा की बूंदों का एक छंद हो

बरखा की बूंदों का एक छंद हो -
हो रहा प्रतीत है।

छंद - छंद मेरे ही नाम तुम करो,
इसी तरह जीवन की शाम तुम करो।
पोर - पोर गीतों की आज दो भिगो -
प्यासा हर गीत है।

जैसे ये मेघ दल उमड - घुमड़ रहे,
अनब्याही धरती के पाँव पड़ रहे।
इसी तरह मेरे ही पास तुम रहो -
जिस तरह अतीत है।

एक बार छू लो तुम सदियों की चाह ये,
हो जाये रेती से मुक्त डाल प्रवाह ये।
सावन में पुरवाई की तरह बहो -
जो अपनी मीत है।

आँधियाँ कितनी निडर चलती रहीं

आँधियाँ कितनी निडर चलती रहीं,
कल्पनायें हाथ भी मलती रहीं।
दीप श्रम का ढल कभी पाया नहीं।
क्योंकि श्रम कंजूस की माया नहीं।

श्रम अभावों में पला विश्वास है,
ये सृजन की आत्मा की प्यास है।
ये भविष्यत से जुड़ा संबल भी है,
ये विगत का जागता इतिहास है।
चन्द्रमा की शान्तिमय छवि की तरह,
भोर में उगते हुए रवि की तरह।
रूप श्रम का कभी ढल पाया नहीं।
क्योंकि श्रम पर अर्थ की छाया नहीं॥

श्रम भुजाओं की असीमित शक्ति है,
चेतना के प्रति मधुर अनुरक्ति है।
भक्ति जैसे भक्त ईश्वर से करें,
ये कुछ ऐसी ही अलौकिक भक्ति है।
आप जैसे जानकारों के लिये,
कह रहा हूं कामगारों के लिये।
सूर्य श्रम का ढल कभी पाया नहीं।
क्योंकि श्रम आलस्य की काया नहीं॥

सिंधु मंथन कर वही अमृत पिये,
जो करे श्रम वो सफल जीवन जिये।
जो कि श्रम के प्रति समर्पित हो गया,
जी रहा वो भारती माँ के लिये।
बात सच है या नहीं बतलाइये,
बाँसुरी पर गा सकें तो गाइये।
गीत श्रम का ढल कभी पाया नहीं।
क्योंकि श्रम को टूटना आया नहीं।

ओ रंगों में डूबी शाम

ओ रंगो में डूबी शाम !

रोक न अपने को पायेंगे रजनी गंधा को छू लेंगे,
बाँहों में फूलों की डाली तरुणाई की खुशबू लेंगे।
अपना मीत तुम्ही को मानें तुम अपने हो तुमको जानें-
मन की देवी तुम्हें प्रणाम !

घूंघट बीच तुम्हारा मुखड़ा मुखड़े में दो नैना चंचल,
इधर प्यास पर प्यास जगी है उधर बरसते ऊदे बादल।
बवाँरी माँग तुम्हारी भरदें गालों पर अंगारे धर दें-
होंठों बीच तुम्हारा नाम !

मिलने के ये दो पल खोकर माफ स्वयं को कर न सकेंगें,
फिर कपास फूटे कि न फूटे अंजुरि अंजुरी भर न सकेगें !
कम कर लें आओ ये दूरी जन्म - जन्म की साध अधूरी-
साथ रहेंगे आठोयाम !

थिरके आँगन मोर

थिरके आँगन मोर हमारे घर आओ,
देखूं पथ की ओर हमारे घर आओ।

जब से छूकर गये देह, मन व्याकुल है,
ऐसे तुम चित-चोर हमारे घर आओ।

मौसम ने जो फूल बिखेरे राहों में,
भर आंचल के छोर हमारे घर आओ।

ऐसी क्या है बात कि पथ ही भूल गये,
महके सुख की भोर हमारे घर आओ।

जितने पल बीतें उतनी साँसें घटतीं,
थामो जीवन - डोर हमारे घर आओ।

अब आ जाओ एक बात मेरी रख लो,
छिली नयन की कोर हमारे घर आओ।

जाने कब उड़ जाये प्राण पंछी प्रसून,
इन पर किसका जोर हमारे घर आओ।

नये तेवर दिखेंगे कल

नये तेवर दिखेंगे कल मचलती धार के जलमें,
जगेंगे कल नये सपने फलेंगी कल नयी कलमें।

नया मधुमास रेती में नये मधुवन रचायेगा,
नया आकाश आगत के सुनहरे गीत गायेगा।
नयी सुबहें नयी गजलें नयी कलियाँ नयी किरणें,
तिलस्मी जाल सारे कांट देगी एक ही पल में।

नयी दुनिया नये मानव विजय का द्वार खोलेंगे,
सृजन के हार हाथों से गुलाबों के पिरोलेंगे।
मछेरे चेतना के गीत सांसो में समोये जा,
समोये जा विचारों में जो ऊँचाई हिमाचल में।

अजय बनकर विजय पाना हमारी कामना होगी,
इरादों का संवर जाना हमारी भावना होगी।
प्रसून ऐसे भी दिन आयेंगे मन के छंद महकेंगे,
नयी होगी चमक कल बाग की हर एक कोपल में।

चेतनाओ के उफान सी जवानी है

चेतनाओं के उफान सी जवानी है,
मेरे हिन्दुस्तान की यही कहानी है।

ये वो देश है जहाँ पे जान्हवी बहे,
एकता की बात एक दूजे से कहे।
मेल औ मिलाप से सभी यहाँ रहे,
द्वेष वाली आग में कभी नहीं दहे।
लोकतन्त्र की परम्परा पुरानी है.
पंचशील की पताका फहरानी है।

आग काश्मीर वाली घाटी में भी है,
आग गुजरात वाली माटी में भी है।
आग पजाब औ गोहाटी में भी है,
आग इतिहास की परिपाटी में भी है।
देवताओं की धरा हमें बचानी है,
ये ही भूमिका हमें तुम्हें निभानी है।

रोगी भावना से दूर भागना भी है,
आलसी प्रवृत्तियों को त्यागना भी है।
एकता की चूनरी को तागना भी है,
वाणी के सपूतों तुम्हें जागना भी है।
नहीं एक इंच भूमि भी गँवानी है,
सोयी युवा चेतना हमें जगानी है।

खेतों - कारखानों में नया सृजन करें,
श्रम की धरा पे श्रम को नमन करें।
बंधु! धर्मोन्माद का चलो शमन करें,
राष्ट्र के विरोधियों का भी दमन करें।
श्रमिकों ने श्रम से न हार मानी है,
ज्योति ये जवाहरी हमें जलानी है।

— ※※※ —

धीरे-धीरे पलकें खोलो

धीरे - धीरे पलके खोलो भीगी हैं जलधार में
सारी उमर बिता डालूंगा एक तुम्हारे प्यार में।

जी चाहे मैं आंख मूंद लूँ नाम तुम्हारा बोल के,
एक साँस में पी जाऊं मैं रूप तुम्हारा घोल के।
हमें सुबह की धूप न भाये मीलों बिखरी ओस में,
अपने पांव थका डालूंगा एक तुम्हारे प्यार में।

मेघों का छोटा सा टुकड़ा इन्ही लटों का नाग है,
मान सरोवर का नीला जल बिना तुम्हारे आग है।
चलो तुम्हें आकाश बना दू तरुणाई के जोश में,
तन को भँवर बना डालूंगा एक तुम्हारे प्यार में।

मैं क्वाँरे गीतों का गायक हँसी तुम्हारी झील है,
श्वेत पाँखुरी है गुलाब की इन प्राणों की कील है,
आज कसम खाकर कहता हूँ अपने पूरे होश में,
मन को जहर पिला डालूंगा एक तुम्हारे प्यार में।

तरुणाई तन की शाखों पर

तरुणाई तन की शाखों पर ले हिलोर झूले,
डर है कहीं न बरखा का जल मन किशोर छूले।

थकी भावना एक चेतना लेकर नई जगी,
बड़ी मेहरबानी मौसम की ऐसी प्यास लगी।
जी करता जी भर निरखें जो भी गुलाब फूले।
डर है कहीं न बरखा का जल मन किशोर छूले।

ऐसा वातवरण कि माटी में आ गई नमी,
फिर भी जाने क्यों लगती हम सबको बहुत कमी।
इसीलिए कुछ गीत जन्म लेंगें नयीन खुशबू ले।
डर है कहीं न बरखा का जल मन किशोर छूले।

वैसे कहने को कितना कुछ घटता जीवन में,
मगर नहीं आ पाती एक निकटता जीवन में।
इन बूंदों में वह जादू है मानव दुख भूले।
डर है कहीं न बरखा का जल मन किशोर छूले।

कभी गीतों ने दुलराया

कभी गीतों ने दुलराया कभी गजलों ने पुचकारा,
कभी मन है प्रसूनों सा कभी मन एक अंगारा।

कभी है जाल के भीतर कभी है जाल हाथों में,
कभी मन एक मछली है कभी मन एक मछुआरा।

कभी पर्वत कभी झरना कभी कोहरा कभी नदिया,
कभी मन हिम-प्रदेशों सा कभी मन मुक्त जलधारा।

कभी है वेद की वाणी कभी है व्योम की गंगा,
कभी मन मील का पत्थर कभी मन एक गलियारा।

कभी मखमल की सेजों सा कभी मरुथल की नीदोंसा,
कभी मन राजपुरुषों सा कभी मन एक बंजारा।

कभी है भोर काशी की कभी है शाम काबा की,
कभी मंदिर, कभी मस्जिद, कभी मन एक गुरुद्वारा।

कभी मन धन कुबेरों सा कभी मन है भिखारी सा,
कभी मन विश्व विजयी है कभी मन स्वयं से हारा।

साँस - साँस में आग लगी है

साँस-सास में आग लगी है मन में दावानल,
जाने क्या लायेगा आगत जाने क्या हो कल।
तभी तो मची हुई हलचल।
इसी से टूटा है संबल ।।

आत्म शक्ति बेबस हो बैठी आत्म चेतना दीन,
राज हंसनी जैसा अंतर सहसा हुआ मलीन।
नदियों की लहरों में इतनी लीन हो गई मीन,
पता नहीं चल सका कि किस पाई सख्त जमीन।
ऊपर वाला तो रहता है आँखों से ओझल,
मुरझा जाने को आतुर है प्राणों की कोपल।
तभी तो मची हुई हलचल।
इसी से टूटा है संबल ।।

अपनापन मृत प्राय हो गया मधुर प्रीति बेजान,
ऐसे में दम तोड़ रहें हैं हृदयों चित अरमान।
छिपकर करने वाले करते पैने शर संधान।
कौन भला कर पायेगा व्याकुलता का अनुमान।
ऐसी भीषण स्थितियाँ ही आज रहीं हैं खल,
आँसू होकर आज निमंत्रणहीन बहे, छल-छल,
तभी तो मची हुई हलचल।
इसी से टूटा है संबल ।।

ऐसे में भी आस लिये हैं पंख नोचते मोंर,
कोई तो आयेगा लेकर आशाओं की भोर।
नयन प्रतीक्षा रत हो देखे आसमान की ओर,
किस पल यह अभिशप्त आत्मा लेगी पुनः हिलोर।
कब लहरायेगा सुहागिनी चाहों का आँचल,
कब सुख के सपनों में खोया होगा ये भूतल।
तभी तो मची हुई हलचल।
इसी से टूटा है संबल ।।

विधाता तुम्ही ने जगत को निखारा

विधाता तुम्हीं ने जगत को निखारा,
हमारा है क्या है सभी कुछ तुम्हारा।

सुमन भी महकते तुम्हारी महक से,
किरन भी चमकती तुम्हारी चमक से।
तुम्ही चेतना बाँटते प्राणियों में,
तुम्ही ने धरा को दिया रूप न्यारा।

तुम्ही एक जल में तुम्ही एक थल में,
तुम्ही हो पवन में तुम्ही हो अनल में।
तुम्हीं ने रची हैं लहर की ऋचाये,
बहाते तुम्ही हो समय की ये धारा।

हमें एक संबल दिया है तुम्हीं ने।
खड़ा अपने पावों किया है तुम्ही ने।
तुम्ही कल तुम्ही आज, कल भी तुम्ही हो,
तुम्ही से चले विश्व का काम सारा।

गीत

परबतिया की अम्मा तुमभी क्या खूब हो ?

बच्ची है ठीक है अभी सँभल जायेगी,
सोचो तो आखिर वो कहाँ निकल जायेगी।

चिंता के सागर में जाती क्यों डूब हो ?

उमर कौन ज्यादा है सत्रहवाँ साल है,
गैया की बछिया है चम्पा की डाल है।

तुम भी क्या समझोगी जंगल की दूब हो !

बेचारी से ऐसा कर रही सलूक हो,
देखो कुछ कहना मत कैसी भी चूक हो।

अपनी ही जायी से क्यों जाती ऊब हो ?

गीत

एक प्यास लेकर जागे हम सबसे मिले गले।
अगर मृत्यु आनी है आये लेकिन साँझ ढले ॥

चक्रवात की पलक खुली है,
हिमगिरि की हर शिला घुली है।
महाकाल की कथा अधूरी कैसे नियत टले ॥

जिनमें पाप - पुण्य सदियों का,
संगम है पावन नदियों का।
यह अपना दुर्भाग्य होम करते ही हाथ जले ॥

आग वही सुलगाई तुमने,
शरण जहाँ भी ली मौसम ने
और वहीं पर सुख के आँचल उड़ने को मचले ॥

हर मंदिर में राम दिखा है,
सत्य और शिव नाम लिखा है।
फिर भी जाने क्यों मायाविन विधवा पीर पले ॥

अभिशापित छाया जीवन की,
पोर - पोर दुखती है तन की।
एक नया अभिशाप हमें हर दिन हर शाम छले ॥

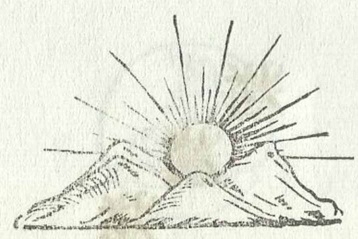

गीत

यह जीवन की नदी चलो हम मिलकर पार करें।

गीतों के आँचल में भर ले
पिछली वे सुधियाँ ,
तलवों के छाले सहलाये
आगत की घड़ियाँ ।
लहरों को अँजुरी में भरकर थोड़ा प्यार करें।

ओठों से छू जाये नियति के
हाथों की बंशी ,
मौसम की हर बात सलोनी
प्यारी सावन सी ।
संकेतों से फूल चुने बातें दो चार करें।

पंख लगे मेघों जैसी गति
वाले पांवों में ,
सुख की गंगा नहला जाये
तेज बहावों में
अपने और परायों का हंसकर मनुहार करें।

मुक्ति पाले वासुकी की कुंडली से

मुक्ति पा ले वासुकी की कुंडली से।
तोड़ ले रिश्ते कि तक्षक मंडली से।

केचुली सा छोड़ता आकाश है,
भोग मुद्रा में दिखा संयास है।
लौट आये पाँव है ये वन स्थली से।
तोड़ ले रिश्ते कि तक्षक मण्डली से।।

हर सुबह भीगी हुई सी देह है,
जुड़ सकेगी भवना संदेह है।
दूर भागे इसलिये उस बावली से।
तोड़ले रिश्ते कि तक्षक-मंडली से।

आज भी कुछ लोग अपने साथ हैं,
दर्द से भारी हुए दो हाथ हैं।
क्यों कि हम अंजुरी भरे गंगाजली से।
तोड़ ले रिश्ते कि तक्षक-मंडली से।

ऐसे ही जीना है

ऐसे ही जीना है
हाथ धरे हाथ पर ।

सोचेंगे आप आखिर -
ऐसी क्या बात है,
काफी कुछ करने का -
अवसर है घात है ।

इस पर भी बोलों क्यों
भटकें फुटपाथ पर ।

राजमार्ग से शुरू -
राजमार्ग पर खतम,
आत्मा तक बंदी है -
किन्तु मुक्ति का भरम ।

झुठलायें कैसे जो
लिखा हुआ माथ पर ।

हिम नदी की बर्फ का आभास

हिम नदी की बर्फ का आभास -
कैसी आग मन में ।

आँख रोना चाहती है पर न आँसू शेष है,
चाहते हैं फिर मुखर होना अधर क्या क्लेष है ?
क्षीर सा उजला लगे आकाश -
काला नाग मन में ।

गीत जगना चाहते हैं किन्तु वे जगते नहीं हैं,
भावना के हंस वाले पंख क्यों उगते नहीं हैं ।
कोयलों को खोज ला मधुमास -
बैठा काम मन में ।

भूख की सबको विरासत में मिली सब जानते है,
प्यास को हम आदमी अपना सगा ही मानते हैं ।
भूख मे कहने लगी है प्यास -
बोझिल राग मन में ।

हम नये हस्ताक्षर है

हम नये हस्ताक्षर हैं ।।
हम नयी कलमें सृजन की ओज के स्वर हैं ।
हम नये हस्ताक्षर हैं ।।

फूल भी हमसे महक लेकर सदा महकें,
और पंछी भी हमारी भाँति ही चहकें ।
ये नदी - पर्वत ये सागर भी हमीं से हैं,
मुक्त झोंके हैं हवा के हंस के पर हैं ।
हम नये हस्ताक्षर हैं ।।

अग्नि हमसे आँच पानी याचना करके,
मेघ जल हमको पिलाते हैं सदा डर के ।
सीखती दुनिया हमीं से ढंग जीने का.
बाल रवि की लालिमा है धूप केसर हैं ।
हम नये हस्ताक्षर हैं ।।

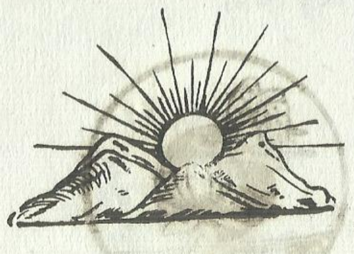

एक लहर

एक लहर मलयानिल की बही,
गुलमोहर साँस - साँस बो गई ।

महक उठे मेघों के फूल से
आइने विहंगिनी दिशाओं के,
लहरों की वंशियां बटोरते
शब्द तैरने लगे ऋचाओं के ।

हिरनीली भूमि को प्रणाम कर,
एक जल परी कुहास धो गई ।

नये - नये रंगों की भीड़ और
मीलों की दूरियाँ समेटती,
जवा कुसुम की मोहक देह से
किरणों की डोरियाँ लपेटती ।

एक धूप चटकीली माँग भर,
नयनों के आसपास खो गई ।

रेतीले पथ वाली दौड़ में,
जीवन की यात्रा पूरी हुई,
भीतर के दावानल के लिए
बूंद - बूंद गंगाजल की हुई ।

जल प्रपात से सपने बीन कर,
एक प्यास वनपलाश हो गई ।

वरदानों ने तोड़ दिया है

वरदानों ने तोड़ दिया है -
किया हुआ कोई अपना ।

सीमाओं से दूर न होंगे दूर उजालों को होना है,
लगे सुबह की धूप नशीली सूरज का जादू टोना है ।
सम्राटों के नाम कर दिया -
नागों ने अपना विष अर्पण ।

मुक्त दिशायें लगी नापने अनजाने ही ग्राम नगर घर,
शिलालेख का नाम हमें दो चीख पड़े मीलों के पत्थर ।
सड़कों से बढ़ता जाता है -
फिर इन पाँवों का आकर्षण ।

गीता लगी बाँचने दुविधा मृण तृष्णा हेराफेरी में,
एक सलोनी चाह बिखर कर लुप्त हो गयी झरबरी में ।
अभी-अभी कोई यायावर -
भावों का कर गया समर्पण ।

प्यास इस तरह जगी

प्यास इस तरह जगी की तरह लगी -
सावन के गीत मेरे मीत बने बावरे ।
सांसों की थिरकन पे नर्तकी सुनाये रे ।
बदरा घिरे मोर नाचे कजरा हँसे छंद बांचे ।।

महमहा गये दुकूल फूल गयी वादियां,
शब्द-शब्द अर्थ बने बोल उठी घाटियां ।
कोमल विचार तैर-तैर झिलमिलाये रे ।
सांसों की थिरकन पे नर्तकी सुनाये रे ।
बदरा घिरे मोर नाचे कजरा हँसे छंद बांचे ।।

गीत मेरे आज बने हंसों की टोलियां,
लाजों की गली - गली प्रातः की ठिठोलियां ।
कंचन समान मन की धूप खिलखिलाये रे ।
सांसों की थिरकन पे नर्तकी सुनाये रे ।
बदरा घिरे मोर नाचे कजरा हँसे छंद बांचे ।।

पायले खनक उठी मचल गई जवानियां,
दुविधा के पांव थके बन गई कहानियां,
आई जो बहार आज फिर कभी न जाये रे ।
सांसों की थिरकन पे नर्तकी सुनाये रे ।
बदरा घिरे मोर नाचे कजरा हँसे छंद बांचे ।।

चलो चले भर ले बाँहों में

चलो चले भर ले बाँहों में बीत रहे जो पल।

हो जायेगा एक महोत्सव पूरा इस जीवन का,
तन का मन का मौसम का अपने घर-आंगन का।

सुखद यही है नभ त्यागे हम ग्रहण करें भूतल।

करें आज कुछ ऐसा मिलकर सदियां याद करें,
गाये अनगाये अनबोले स्वर आबाद करें।

पाये इतनी प्रीति हृदय की कटुता जाये जल।

जाना अभी हमें है अपनी मजिल से आगे,
बिखरे हुए स्वप्न खुशियां के वर्तमान मांगे।

जो भी करना है कर डाले क्या कर लेंगे क ।

जितनी बार मिले तुम मुझसे

जितनी बार मिले तुम मुझसे -
पावम सुधियां छोड़ गये हो।

काले केशों को बिखराकर
बदली का आभास दिया है,
खुली - अधखुली पलके चंचल
आंचल भर आकाश दिया है।
तुम बिखेर कर हँसी सुनहरी -
अमृत-कलश क्यों फोड़ गये हो।

अधर फालसो के रंग वाले
प्यासे जीवन को महकाये,
नयन तुम्हारे हरिणी जैसे
मधुर प्रीति का रस छलकाये।
छलका कर दो बोल नेह के -
टूटी कड़ियाँ जोड़ गये हो।

चित्रलिखित मन वैरागी था
तुमने भर अनुराग दिया हैं,
अनगाये गीतों को तुमने
अनुपम स्वर्णिम राग दिया है।
बनकर के गंगा की धारा -
मन की धारा मोड़ गये हो।

हम स्वदेश के लिये

हम स्वदेश के लिये -
जियें - मरें।
व्यर्थ हाथ क्यों मलें,
रोशनी के घर चलें।
भीख और की न लें,
काम जो करें फलें।
भारतीय भूमि को -
नमन करें।
फूल स्वप्न के खिलें,
प्रेम से गले मिलें।
स्वार्थ के शिखर हिलें,
मिलें हमारी मंजिलें।
श्रम मुकुट हरेक शीश -
पर धरें।
न तीर से कटार से,
न द्वेष की बयार से।
जीत लें दुलार से,
आदमी को प्यार से।
देह - प्राण में नवीन -
स्वर भरें।

जय हो भारत माँ की जय हो

जय हो भारत मां की जय हो।
मन को पुलकित करने वाली जन्म-भूमि सुषमा की जय हो।
जय हो भारत मां की जय हो।

नभ को छूता हुआ हिमालय जिसके माथे का चंदन है,
देवों को भी मोहित करती ऐसी माटी का वंदन है।
विनयी कहकर पूजी जाती पंचशील धर्मा की जय हो।
जय हो भारत मां की जय हो।

नदियाँ जिसकी पदरज लेतीं सागर जिसके गीत सुनाते,
सावन के बादल घिर-घिर के जिसकी सांसों को महकाते।
जिसकी वाणी में गीता है पुण्य सुखद-कर्मा की जय हो।
जय हो भारत माँ की जय हो।

पाप काँपता रहता जिससे पावनतम अतीत है जिसका
जगत विदित महिमा है जिसकी आगत भी पुनीत है जिसका
शब्दों में जो व्यक्त न हो उस अतुलनीय गरिमा की जय हो।
जय हो भारत माँ की जय हो।

भारती माँ

भारती माँ, हम तुम्हारे नाम को रोशन करेगें।
चेतना के गीत, भावों के सुमन अर्पण करेगें।

हर सुबह मोहक तुम्हारी
शाम की क्या बात है,
लोरियां गाकर सुलाती
गुनगुनाती रात है।
देख लेना एक दिन तुम जल सरीखा मन करेगे।
चेतना के गीत, भावों के सुमन अर्पण करेंगे।

भूमि चंदन सी महकती
धूप का जिसमें बसेरा,
रोशनी की घाटियों में,
टिक नहीं सकता अंधेरा।
हर घड़ी उत्सव तुम्हारे द्वार-घर-आंगन करेंगे।
चेतना के गीत, भावों के सुमन अर्पण करेंगे।

माँ ! तुम्हारे भाल पर है
ताज किरणों का सुनहरा,
पाँव चूमे पर्वतों की
घाटियों का मुक्त कोहरा।
हम सभी मिलकर तुम्हारा आज अभिनंदन करेंगे।
चेतना के गीत, भावों के सुमन अर्पण करेंगे।

शरमाये दूल्हन सी ये सुबह

शरमाये दूल्हन सी ये सुबह -
निखर गई किरणों की आँख बन।

सूरज की धूप रेशमी मौसम की थाल में गिरी,
झीलों के बीच हँसिनी लहरों के जाल से घिरी।
पियराये सरसों सी ये सुबह -
बिखर गयी सोने की राख बन।

झीलों तक ओस दूब की तलवों की खाल पी गई,
रश्मिरथी चाह रूपसी सुधियों के पर्त सी गई।
महकाये चंदन सी ये सुबह -
साँसों को फूलों की शाख बन।

उजियारी फैलती रहे अंधियारों के मकान में,
तरुणाई दौड़ती रहे आजीवन वर्तमान में।
गहराये दर्पण सी ये सुबह -
उड़े कहीं पंछी की पाँख बन।

खिलखिलाये हास बन

खिलखिलाये हास बन -
आँसू किसी की चाह में।

फिर किसी की आँख का जादू निगाहों का,
एक सपना हो गया जंगल गुनाहों का।
डबडबाये साँस बन -
आँसू किसी की आह में।

शाख सी झरती रही पिछले सवालों की,
तैरती परछाइयाँ जल पर उजालों की।
बुदबुदाये प्यास बन -
आँसू किसी की राह में।

इन्द्रधनुषी धूप के झरने दुकूलों के,
अजनबी होते गये चेहरे बबूलों के।
महमहाये फाँस बन -
आँसू किसी की बाँह में।

भूल गया हूँ अपना सब कुछ

भूल गया हूं अपना सब कुछ पागल हो जाने दो।
हमें व्यंग्य की तलवारों से घायल हो जाने दो॥

साथ न मेरा छोड़ सकेगा मेरा आवारापन,
बांध न पायेगा अब मुझको जग का कोई बंधन।
भले दुर्ग ढह जाये मन के दुःख न कोई होगा,
अभिशापों के पांवों वाली पायल हो जाने दो॥

क्या बतलाऊँ क्या खोया है इस गुमनाम सदी में,
हाथ बाँधकर कूद पड़ा मैं तम की एक नदी में।
उसकी वेगवती लहरों को बाँध सकूं दो पल ही,
आँधी तूफानों का मैला आँचल हो जाने दो॥

मेरे भीतर का अपराधी मानव बोल रहा है,
जन्म-जन्म के अपराधों की खिड़की खोल रहा है।
मुखर हुआ है आज अचानक पश्चाताप उभर कर,
विधवा की आंखों का पिघला काजल हो जाने दो॥

सुख दुख वाले मेघ बरस कर छू जाते है तन को,
और भिगो जाते हैं अक्सर इस प्यासे जीवन को।
सुख दुख वाली इन बूंदों में शांति बहुत मिलती हैं,
खो जाने दो इन बूंदों में बादल हो जाने दो॥

यह मौसम के फूल तुम्हारे

यह मौसम के फूल तुम्हारे -
आँचल में भर दें।

नहीं लौटकर आता फिर से जो पल बीत गया,
जल की धारा रचती जाये वातावरण नया।
यह नदियों के कूल तुम्हारे -
भावों को स्वर दें।

उड़े जा रहे पंख खोलकर ये कपोत मन के,
नील गगन में नयन खुल गये सुख के दर्पण के।
लहरों से हम कहें प्रीति के -
ढाई आखर दें।

हम तुम गाये गीत सुबह के, कल के स्वागत के,
महका दें हर एक पंखुरी सपने आगत के।
कहीं रश्मि से रजत स्वप्न ये -
सोने से भर दें।

इतना मन को छुओ न

इतना मन को न छुओ न श्यामल तन को प्यास रेख हो जाये,
ऐसा भी शरमाना क्या है दर्पण शिलालेख हो जाये।

मौसम रोज कहा करता है
इतनी दूरी ठीक नहीं है,
जहां पांव की छाप तुम्हारी
मेरी अपनी लोक वही है।
मुझे शिकायत कभी न होगी यौवन की ऋतुमयी लहर से,
थम-थम कर बलखाती आती रग-रग में संगीत समाये।

भर लूंगा रंगों के प्याले
रूप माधुरी पिघल रही है,
गीत - गजल छंदों की धारा
साँस - साँस से निकल रही है।
इसीलिए बिखरी है शबनम घिरी घटाये आसमान में,
आज प्रकृति की एक बालिका, गंधों का संदेश सुनाये।

बिंदिया की गोलाई सूरज
चंदा थाली है सोने की,
कानों की बाली पांवों की
पायल जादू टोने सी।
हाँथों के कंगन किरणों की तरुणाई सब लूट नुके हैं,
अधरों पर नथुनी की छाया मेरे मन उन्माद जगाये।

अनागत–कविता–आन्दोलन के प्रवर्त्तक

कवि डा० अजय प्रसून

जन्म तिथि- १८–१–१९५४
पिता का नाम- श्री सरोजकुमार द्विवेदी
शिक्षा- एम० ए० हिन्दी, बी० एम० एस०
सम्प्रति- शासकीय सेवा
स्थायी पता- ७७, सरोज निकेतन, हेल्थ स्क्वायर लखनऊ पिन–२२६००३
प्रकाशित कृतियां-युग के आंसू, गाओ गीत सुनाओ गीत (उ. प्र. शासन द्वारा पुरस्कृत) बच्चो शिष्टाचार न भूलो, महानगर के बीच, बच्चों की प्यारी कवितायें, बाँसुरी की भीतरी तह में।

सम्पादित-शब्द नये गढ़ने हैं, अनागत के कमल हम हैं, 'ताम्रपर्णी' कविता प्रधान त्रैमासिकी वर्ष १९७८।

प्रसारण- आकाशवाणी, दूरदर्शन द्वारा नियमित प्रसारण, आकाशवाणी द्वारा संगीत बद्ध गीतों हेतु अनुबन्धित रचनाकार।

प्रकाशन- देश की लगभग सभी पत्र पत्रिकाओं में कवितायें प्रकाशित अनेक शोधग्रन्थों में चर्चा, अनेक काव्य संकलनों के सहयोगी रचनाकार।

हिन्दी के चर्चित रचनाकार डा. अजय प्रसून ने प्रारम्भ में ही हिन्दी की श्री वृद्धि का जो मौन संकल्प लिया था, उसे अपनी काव्य-साधना से पूर्ण करने में सफल रहे। नयी पीढ़ी का झुकाव हिन्दी साहित्य के प्रति मानवतावादी एवं कल के लिये सुखद हो, इसलिये आपने अनागत कविता आन्दोलन को जन्म दिया, जिसके माध्यम से नये रचनाकारों को बल मिला एवं नवीन दिशा मिली। आप वरिष्ठ रचनाकारों की पंक्ति में आते हैं। आप कठिन वर्तमान में जीते हुये, अतीत की त्रासदी का विश्लेषण कर सुखमय भविष्य अर्थात अनागतीय वातावरण बनाने के लिये सतत प्रयासरत हैं।

मेरी कामना है कि माँ वाणी उन्हें साहित्य का सूर्य बनायें।

'गीतों–गज़लों से करें नित साहित्य विकास।
ये तो अजय प्रसून हैं, इनमें माँ का वास।।'

'मयंक किशोर शुक्ल मयंक'